चौ0 बंसीलाल राजकीय महाविद्यालय
लोहारू (भिवानी) हरियाणा

राष्ट्रीय बहुविषयक संगोष्ठी

(उच्चतर शिक्षा विभाग हरियाणा द्वारा प्रायोजित)

भारतीय ज्ञान परम्परा के विविध आयाम

दिनांक : 21 नवंबर, 2026

आयोजक :-

आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ & अनुसंधान एवं विकास प्रकोष्ठ



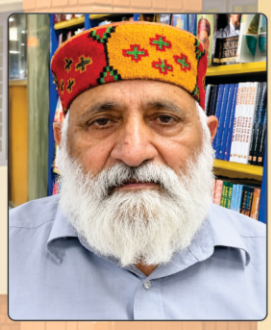
मुख्य संरक्षक
श्री एस. नारायणन, आई.एफ.एस.
महानिदेशक, उच्चतर शिक्षा विभाग, हरियाणा



मुख्य अतिथि
प्रोफेसर डॉ0 राम पाल सैनी
कुलगुरू, चौ0 रणबीर सिंह विश्वविद्यालय, जीन्द



संरक्षक
प्राचार्य श्री दलजीत सिंह
चौ. बंसीलाल राजकीय महाविद्यालय, लोहारू



मुख्य वक्ता
डॉ0 कुलदीप चन्द्र अग्निहोत्री, पूर्व कुलपति
केन्द्रीय विश्वविद्यालय, हिमाचल प्रदेश, धर्मशाला



प्रतिष्ठित वक्ता
प्रोफेसर डॉ0 सुधीर कुमार आर्य
संस्कृत एवं भारतीय अध्ययन विभाग, जे0एन0यू0, नई दिल्ली



प्रतिष्ठित वक्ता
डॉ0 कुलदीप कुमार
राजनीति विज्ञान विभाग, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र

महाविद्यालय के विषय में–

चौ0 बंसीलाल राजकीय महाविद्यालय, लोहारू की स्थापना 1 जुलाई, 1987 को हुई थी। यह महाविद्यालय चौधरी बंसी लाल विश्वविद्यालय, भिवानी से मान्यता प्राप्त है। महाविद्यालय में चार स्नातक (बी0ए0, बी0कॉम0, बी0एस0सी0 लाईफ साईंस, बी0एस0सी0 फिजीकल साईंस) एवं छह स्नातकोत्तर (हिन्दी,राजनीति विज्ञान, अंग्रेजी, इतिहास, एम0कॉम0 एवं एम0एस0सी0 रसायन विज्ञान) पाठ्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS) छात्र एवं छात्राओं के लिए राष्ट्रीय कैडेट कोर (NCC) की इकाई खेल प्रकोष्ठ तथा रेडक्रॉस प्रकोष्ठ सक्रिय हैं। इन गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों में नेतृत्व क्षमता, अनुशासन, सामाजिक उत्तरदायित्व, सहयोग एवं सेवाभाव विकसित करने के लिए निरंतर प्रयास किए जाते हैं।

संगोष्ठी का परिचय–

भारतीय ज्ञान परम्परा के विविध आयाम विषय पर आयोजित यह राष्ट्रीय बहुविषयक संगोष्ठी भारतीय ज्ञान परम्परा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, विविध आयाम, सांस्कृतिक विरासत तथा समकालीन प्रासंगिकता पर विचार–विमर्श के लिए एक अंतरविषयी मंच प्रदान करेगी। भारतीय समाज का विकास विविध ऐतिहासिक अनुभवों, दार्शनिक विचारधाराओं तथा सांस्कृतिक अंत: क्रियाओं के माध्यम से हुआ है। समन्वय, सह–अस्तित्व, संवाद और संश्लेषण भारतीय सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना के महत्त्वपूर्ण तत्त्व रहे हैं। भारतीय ज्ञान परम्परा में दर्शन, साहित्य, राजनीति, अर्थव्यवस्था, शिक्षा, विज्ञान, गणित, चिकित्सा, योग, पर्यावरण तथा सामाजिक जीवन से संबंधित विविध ज्ञान प्रणालियाँ समाहित हैं।

वैश्वीकरण के वर्तमान दौर में यह विचार करना आवश्यक है कि भारतीय चिंतन वैश्विक परिवर्तनों के साथ संवाद स्थापित करते हुए स्थानीय संस्कृतियों, पारम्परिक ज्ञान प्रणालियों तथा सामाजिक व्यवहारों के महत्त्व को किस प्रकार बनाए रख सकता है। इसी संदर्भ में संगोष्ठी के दौरान भारतीय ज्ञान परम्परा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तथा संयुक्त राष्ट्र के सतत् विकास लक्ष्यों के पारस्परिक संबंधों पर भी विचार–विमर्श किया जाएगा। इस संगोष्ठी में शिक्षाविद्, शिक्षक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी शिक्षा, समाज, शासन, अर्थव्यवस्था, पर्यावरण तथा समकालीन सामाजिक चुनौतियों के संदर्भ में भारतीय ज्ञान परम्परा के योगदान का विश्लेषण करेंगे। इसका उद्देश्य भारतीय ज्ञान परम्परा के विविध आयामों पर सार्थक अकादमिक संवाद को प्रोत्साहित करना तथा भावी अनुसंधान के लिए नई संभावनाओं की पहचान करना है।

संगोष्ठी के उद्देश्य–

1. भारतीय ज्ञान परम्परा तथा वर्तमान सामाजिक आवश्यकताओं के बीच आपसी सम्बन्धों को समझना।
2. स्थानीय ज्ञान, पारम्परिक अनुभवों तथा आधुनिक ज्ञान प्रणालियों के समन्वय की संभावनाओं का अन्वेषण करना।
3. भारतीय समाज की समकालीन चुनौतियों के समाधान के लिए भारतीय दृष्टिकोण की उपयोगिता का आकलन करना।
4. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों तथा शिक्षा में भारतीय ज्ञान परम्परा के समावेशन पर अकादमिक संवाद को प्रोत्साहित करना।
5. सतत् विकास लक्ष्यों की प्राप्ति में भारतीय ज्ञान, जीवन–मूल्यों तथा स्थानीय पद्धतियों के योगदान पर विचार–विमर्श करना।
6. विभिन्न विषयों के शिक्षकों, शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों के बीच अंतर्विषयी संवाद और विचारों के आदान–प्रदान को बढ़ावा देना।
7. भारतीय ज्ञान परम्परा से सम्बंधित शोध, अध्ययन एवं शिक्षण के लिए नवीन दृष्टिकोण विकसित करना।
8. प्रस्तुत शोधपत्रों एवं विचारों के आधार पर भावी अनुसंधान तथा अकादमिक गतिविधियों के लिए उपयोगी दिशाएँ सुझाना।

उपविषय–

1. भारतीय ज्ञान परम्परा : समन्वयवादी दृष्टिकोण।
2. वेदों एवं उपनिषदों में भारतीय ज्ञान परम्परा की अवधारणा।
3. संस्कृत साहित्य में विज्ञान, दर्शन एवं पर्यावरण चेतना।
4. भारतीय दार्शनिक परम्परा में मन, चेतना एवं आत्मज्ञान।
5. आयुर्वेद एवं भारतीय चिकित्सा परम्परा।
6. पारम्परिक कृषि–विज्ञान, जैव–विविधता एवं जल–प्रबंधन।
7. भक्ति साहित्य की लोकमंगलकारी दृष्टि एवं सामाजिक समरसता।
8. भारतीय दर्शन में मानवतावाद की अवधारणा।
9. भारतीय राजनीतिक चिंतन में राज्य, शासन, सुशासन एवं लोक कल्याण
10. भारतीय ज्ञान परम्परा में अन्त्योदय व सामाजिक कल्याण का दृष्टिकोण।
11. प्राचीन भारत की शिक्षा परम्परा : नालंदा एवं तक्षशिला का ऐतिहासिक योगदान।
12. भारतीय विज्ञान, गणित, प्रौद्योगिकी एवं खगोल–विज्ञान की ऐतिहासिक परम्परा।
13. भारतीय आर्थिक चिंतन में स्वदेशी एवं श्रम–दर्शन: दत्तोपंत ठेंगड़ी के विशेष संदर्भ में।
14. भारतीय योग एवं ध्यान परम्परा: मानसिक एवं समग्र स्वास्थ्य तथा आधुनिक जीवन में प्रासंगिकता।
15. डिजिटल युग में भारतीय ज्ञान परम्परा का संरक्षण, अभिलेखीकरण एवं प्रसार।
16. भारतीय ज्ञान परम्परा में परिवार, समुदाय एवं सामाजिक एकता।
17. वाणिज्य एवं प्रबंधन में भारतीय ज्ञान प्रणाली की प्रासंगिकता।
18. भारत के स्वदेशी खेल और भारतीय ज्ञान प्रणाली।

नोट–मुख्य विषय से सम्बन्धित अन्य उपविषय भी स्वीकार्य होंगे।

शोधपत्र प्रस्तुत करने संबंधी दिशा–निर्देश–

1.शोध–सार (Abstract) शोधसार 250–500 शब्दों का होना चाहिए। इसमें शोध–समस्या, शोध के उद्देश्य, अनुसंधान–पद्धति तथा प्रमुख निष्कर्षों का स्पष्ट उल्लेख किया जाना चाहिए।

2.पूर्ण शोधपत्र पूर्ण शोधपत्र लगभग 4,000 शब्दों का होना चाहिए। शब्द–सीमा में संदर्भ–सूची, तालिकाएँ एवं चित्र भी शामिल होंगे।

3.भाषा शोधपत्र हिंदी अथवा अंग्रेजी में प्रस्तुत किए जा सकते हैं।

4.फोंट एवं प्रारूप शोधपत्र मानक यूनिकोड फोंट में तैयार किया जाए। दस्तावेज MS Word प्रारूप में होना चाहिए। मुख्य पाठ का फोंट आकार 12 तथा पंक्ति–अंतराल 1.5 रखा जाए।

5.प्रस्तुति का माध्यम शोधपत्र की सॉफ्ट कॉपी MS Word प्रारूप में प्रस्तुत की जाए।

6.लेखक का विवरण शोधपत्र के साथ लेखक का नाम, संस्था ई–मेल पता एवं मोबाइल नंबर स्पष्ट रूप से अंकित होना चाहिए।

7.शैक्षणिक गुणवत्ता शोधपत्र मौलिक, विषयानुकूल तथा अकादमिक मानकों के अनुरूप होना चाहिए। प्रयुक्त संदर्भों एवं उद्धरणों का उचित उल्लेख किया जाए।

महत्त्वपूर्ण तिथियाँ–

शोधसार जमा करने की अंतिम तिथि : 11 नवंबर, 2026
शोधसार की स्वीकृति की सूचना : 13 नवंबर, 2026
पूर्ण शोध पत्र भेजने की अंतिम तिथि : 18 नवम्बर, 2026
राष्ट्रीय बहुविषयक संगोष्ठी : 21 नवंबर, 2026

पंजीकरण शुल्क–

शिक्षाविद् एवं शिक्षक	500/-
शोधार्थी	300/-
विद्यार्थी	100/-

पंजीकरण लिंक–https://forms.gle/pR9C8NMFWvmm2RFs9

Mode :- Offline

Online :- Only for Participants other than Haryana

बैंक खाते का विवरण –

पंजीकरण शुल्क जमा करने के लिए बैंक खाते का विवरण निम्नलिखित है :–

बैंक का नाम : HDFC Bank
खाताधारक का नाम : Principal,
Ch. Bansi Lal Govt. College, Loharu
खाता संख्या : 50100550976050
IFSC Code : HDFC0004066
शाखा : लोहारू, भिवानी, हरियाणा

संरक्षक मंडल एवं आयोजन समिति–

मुख्य संरक्षक : श्री एस. नारायणन, आई.एफ.एस.
महानिदेशक, उच्चतर शिक्षा विभाग, हरियाणा

संरक्षक : श्री दलजीत सिंह
प्राचार्य, चौ0 बंसीलाल राजकीय महाविद्यालय, लोहारू (भिवानी)

संयोजक : डॉ0 सुखवीर सिंह (एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास विभाग)

सह–संयोजक : डॉ0 मुकेश कुमार (एसोसिएट प्रोफेसर, अंग्रेजी विभाग)

समन्वयक : डॉ0 बजरंग (सहायक प्राध्यापक, वाणिज्य विभाग)

सह–समन्वयक : डॉ0 सुजीत कुमार (सहायक प्राध्यापक, संस्कृत विभाग)

आयोजन सचिव : श्री विजय (सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान विभाग)

सह आयोजन सचिव : डॉ0 उमेद (सहायक प्राध्यापक, वाणिज्य विभाग)

आयोजन समिति :

- श्री अनिरूद्ध (इतिहास विभाग)
- डॉ0 प्रीति (वनस्पति विज्ञान विभाग)
- श्री देवेन (शारीरिक शिक्षा विभाग)
- श्री विक्रम (भूगोल विभाग)
- श्री दीपक कुमार (भूगोल विभाग)
- श्री राजपाल (भूगोल विभाग)
- श्री तरूण (भूगोल विभाग)
- श्री प्रदीप कुमार (राजनीति विज्ञान विभाग)
- डॉ0 अशोक कुमार (राजनीति विज्ञान विभाग)
- श्री राजेन्द्र सिंह (राजनीति विज्ञान विभाग)
- डॉ0 विजय (वाणिज्य विभाग)
- श्रीमती मोनिका (वनस्पति विज्ञान विभाग)
- डॉ0 अंजू (वनस्पति विज्ञान विभाग)
- श्रीमती संगम (जीव विज्ञान विभाग)
- सुश्री नेहा (जीव विज्ञान विभाग)
- श्रीमती प्रीति (हिन्दी विभाग)
- श्रीमती सरिता (समाज शास्त्र विभाग)
- डॉ0 पूनम (मनोविज्ञान विभाग)
- श्री दीपक कुमार (कम्प्यूटर विज्ञान विभाग

Venue Location QR



!! सा विद्या या विमुक्तये !!

